IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छात्रों की सामाजिक.आर्थिक पृष्ठभूमि का उनकी उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा पर प्रभाव

शोध निर्देशक
डॉ.सतीश कुमार
प्राध्यापक– शिक्षा संकाय
जे0एस0 विश्वविद्यालय शिकोहाबाद

शोधार्थी
रिचा सोनकर
शिक्षा संकाय
जे0एस0 विश्वविद्यालय शिकोहाबाद

सारांश

इस शोध-पत्र का उद्देश्य छात्रों की उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा पर उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन करना है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) शिक्षा में एक महत्त्वपूर्ण कारक है, जो न केवल शैक्षणिक उपलब्धियों बल्कि छात्रों की आंतरिक प्रेरणा को भी प्रभावित करती है। इस अध्ययन में पाया गया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र अपेक्षाकृत अधिक उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरित पाए गए, जबकि निम्न स्तर के छात्रों में संसाधनों की कमी व अवसरों की न्यूनता के कारण यह प्रेरणा कम देखी गई। वर्तमान शोध-पत्र का उद्देश्य छात्रों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और उनकी उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा के मध्य संबंध को स्पष्ट करना है। शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह छात्रों की आकांक्षाओं, आत्मविश्वास और भविष्य की दिशा को भी प्रभावित करती है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) जैसे—परिवार की आय, माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय तथा सामाजिक प्रतिष्ठा—विद्यार्थियों की मानसिक प्रवृत्तियों और शैक्षिक दृष्टिकोण को आकार देती है।क्योंकि उन्हें संसाधन, शैक्षिक अवसर और पारिवारिक सहयोग पर्याप्त रूप से उपलब्ध होता है। इसके विपरीत, निम्न SES वाले छात्रों में संसाधनों की कमी, शैक्षिक वातावरण का अभाव तथा सामाजिक दबाव के कारण प्रेरणा स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया। साथ ही, विद्यालय का प्रकार (सरकारी/निजी) और पारिवारिक पृष्ठभूमि, दोनों का संयुक्त प्रभाव भी छात्रों की उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा पर देखा गया।यह अध्ययन इंगित करता है कि यदि निम्न SES पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों को उचित अवसर, परामर्श, छात्रवृत्ति एवं सहायक वातावरण प्रदान किया जाए तो उनकी प्रेरणा एवं उपलब्धि-स्तर में भी सकारात्मक वृद्धि संभव है।

मुख्य शब्द: सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा, शिक्षा, छात्र

भूमिका

शिक्षा किसी भी व्यक्ति एवं समाज के विकास का मूल स्तंभ है। यह केवल ज्ञान और कौशल अर्जित करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि व्यक्ति की सोच, दृष्टिकोण, व्यक्तित्व तथा समाज में उसकी स्थिति को भी प्रभावित करती है। शिक्षा के माध्यम से न केवल बौद्धिक विकास होता है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, समान अवसर और राष्ट्रीय विकास की दिशा

में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों के पीछे कई कारक कार्यरत होते हैं, जिनमें "प्रेरणा" (Motivation) का विशेष स्थान है।

उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा (Achievement Motivation) को वह आंतरिक शक्ति कहा जाता है, जो व्यक्ति को निरंतर उत्कृष्टता प्राप्त करने, कठिनाइयों से संघर्ष करने और प्रतिस्पर्धा में सफलता अर्जित करने के लिए प्रेरित करती है। McClelland (1961) के अनुसार, उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा किसी भी समाज की आर्थिक प्रगति और विकास की दर को निर्धारित करती है। विद्यालय स्तर पर यह प्रेरणा छात्रों को केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें आत्मविश्वासी, परिश्रमी और नवाचारी बनने के लिए भी प्रेरित करती है।

दूसरी ओर, **सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि (Socio-Economic Background)** विद्यार्थियों की उपलब्धि और प्रेरणा पर गहरा प्रभाव डालती है। इसमें परिवार की आय, माता-पिता की शिक्षा का स्तर, पेशा, सामाजिक स्थिति, परिवार का आकार तथा सांस्कृतिक वातावरण जैसे कारक शामिल होते हैं। उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों को बेहतर शैक्षिक संसाधन, तकनीकी सुविधाएँ, पुस्तकालय, इंटरनेट, ट्यूशन, कोचिंग संस्थान और प्रेरणादायक पारिवारिक माहौल उपलब्ध होता है। इसके विपरीत, निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के छात्र आर्थिक कठिनाइयों, संसाधनों की कमी, अभिभावकों की शैक्षिक जागरूकता की कमी तथा सामाजिक असमानताओं के कारण पीछे रह जाते हैं।

भारत जैसे बहुसांस्कृतिक और विषम सामाजिक ढाँचे वाले देश में यह समस्या और भी गंभीर है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों, सरकारी और निजी विद्यालयों, तथा विभिन्न जातीय-धार्मिक समूहों के बीच सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। इन असमानताओं का सीधा असर छात्रों की शैक्षिक प्रगति और उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा पर पड़ता है।

विशेषकर **फ़िरोज़ाबाद जिला**, जो अपने काँच उद्योग और अर्ध-शहरी-ग्रामीण पृष्ठभूमि के लिए प्रसिद्ध है, वहाँ के छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति विविधताओं से भरी हुई है। यहाँ बड़ी संख्या में ऐसे परिवार हैं जिनकी आय सीमित है और जो शिक्षा पर अपेक्षाकृत कम व्यय कर पाते हैं। वहीं दूसरी ओर, कुछ परिवार अपेक्षाकृत उच्च आर्थिक स्तर के होने के कारण अपने बच्चों को निजी विद्यालयों और कोचिंग संस्थानों में भेज पाते हैं। इस असमानता का असर सीधे-सीधे छात्रों की उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा पर पड़ता है।

शिक्षा किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है। यह केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक सामंजस्य, आर्थिक प्रगति और रचनात्मक सोच को भी प्रभावित करती है। शिक्षा का उद्देश्य तभी पूर्ण होता है जब छात्र अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित हों। इस संदर्भ में "उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा" (Achievement Motivation) एक केंद्रीय तत्व है, जो छात्रों को उत्कृष्टता प्राप्त करने, प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने और व्यक्तिगत तथा सामाजिक लक्ष्यों को साधने के लिए प्रेरित करती है।

छात्रों की **सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि** (Socio-Economic Background) उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा के स्तर को गहराई से प्रभावित करती है। परिवार की आय, माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय, पारिवारिक वातावरण और सामाजिक स्तर ऐसे कारक हैं, जो न केवल छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों को बल्कि उनके भीतर सीखने की जिज्ञासा, आत्मविश्वास और लक्ष्य-प्राप्ति की मानसिकता को भी आकार देते हैं। उच्च सामाजिक-आर्थिक वर्ग के छात्र प्रायः संसाधनों, शैक्षिक अवसरों और प्रेरणादायक वातावरण से संपन्न होते हैं, जिससे उनका उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा स्तर ऊँचा होता है। इसके विपरीत, निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के छात्रों को संसाधनों की कमी, अवसरों की न्यूनता और सामाजिक-आर्थिक दबाव का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी प्रेरणा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ व्यापक हैं, यह अध्ययन और भी प्रासंगिक हो जाता है। विशेष रूप से **फ़िरोज़ाबाद जिले** जैसे अर्ध-शहरी एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यहाँ के विद्यालयी छात्रों में उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बीच संबंध का विश्लेषण शिक्षा की गुणवत्ता और समानता को समझने में सहायक हो सकता है।

इस अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाएगा कि छात्रों की उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा किस प्रकार उनके पारिवारिक आर्थिक स्तर, अभिभावकों की शिक्षा और विद्यालय के प्रकार से प्रभावित होती है। साथ ही, यह शोध उन कारणों की पहचान करने में भी सहायक होगा, जिनके आधार पर निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के छात्रों की प्रेरणा को सुदृढ़ करने के लिए नीतिगत कदम उठाए जा सकते हैं।

साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा किसी भी शोध का अनिवार्य अंग है, जो पूर्ववर्ती अध्ययनों की दिशा, प्रवृत्तियों और निष्कर्षों का व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत करती है। इस अध्याय में छात्रों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि तथा उसकी उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा पर प्रभाव संबंधी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शोधों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और शैक्षिक उपलब्धि

सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status – SES) शिक्षा में उपलब्धियों और प्रेरणा को निर्धारित करने वाला महत्वपूर्ण घटक है।

- **Coleman (1966)** ने स्पष्ट किया कि विद्यालयों के संसाधनों से अधिक छात्रों की पारिवारिक पृष्ठभूमि उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।
- **Sirin (2005)** ने 101 अध्ययनों पर आधारित *meta-analysis* में निष्कर्ष निकाला कि SES और शैक्षिक उपलब्धि के बीच मध्यम से उच्च स्तर का सकारात्मक संबंध पाया जाता है।
- **White (1982)** ने यह दर्शाया कि SES का प्रभाव सभी आयु समूहों और सभी विषयों में स्थायी रूप से पाया जाता है

- **McClelland (1961)** ने कहा कि जिन परिवारों में उपलब्धि-उन्मुखी मूल्य अधिक होते हैं, वहाँ के बच्चे भी उच्च उपलब्धि की ओर उन्मुख होते हैं।
- **Sewell & Hauser (1980)** ने पाया कि माता-पिता का शिक्षा स्तर और सामाजिक स्थिति बच्चों की शैक्षिक आकांक्षाओं तथा कैरियर निर्धारण में निर्णायक होती है।
- **Verma (2015)** के अनुसार, उच्च शिक्षित माता-पिता के बच्चे अधिक महत्वाकांक्षी और लक्ष्य-उन्मुख पाए गए।

- **Agarwal (2012)** ने दर्शाया कि निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा सरकारी विद्यालयों की तुलना में अधिक होती है।
- **Chaudhary (2013)** के अध्ययन के अनुसार विद्यालय का संसाधन-समृद्ध वातावरण छात्रों में प्रतियोगिता, आत्मविश्वास और उपलब्धि की इच्छा को प्रोत्साहित करता है।

- **Singh (2014)** ने पाया कि उच्च SES पृष्ठभूमि से आने वाली लड़कियाँ उतनी ही उपलब्धि-प्रेरित होती हैं जितने लड़के।
- **Kaur (2017)** और **Rani (2018)** के अनुसार निम्न SES पृष्ठभूमि की लड़कियों की उपलब्धि प्रेरणा सामाजिक प्रतिबंधों और घरेलू जिम्मेदारियों के कारण सीमित रह जाती है।

- **Tripathi (2011)** ने पाया कि शहरी छात्रों में उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा ग्रामीण छात्रों से अधिक होती है।
- **Yadav (2020)** ने निष्कर्ष निकाला कि शहरी पृष्ठभूमि के छात्रों को अधिक संसाधन, पुस्तकालय और तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं, जिससे उनमें उपलब्धि प्रेरणा अधिक प्रबल होती है।

- **Atkinson (1964)** के *Achievement Motivation Theory* में सफलता की इच्छा और असफलता के भय को प्रमुख माना गया है। उच्च SES छात्रों में असफलता का भय कम और सफलता की आकांक्षा अधिक होती है।

- **McClelland (1961)** ने कहा कि उच्च उपलब्धि-प्रेरणा न केवल व्यक्तिगत सफलता बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी योगदान करती है।

- **Mishra (2010)**: मध्यमवर्गीय छात्रों में उपलब्धि-प्रेरणा अधिक पाई गई।
- **Sharma (2016)**: पारिवारिक पृष्ठभूमि और SES का माध्यमिक स्तर के छात्रों पर सीधा प्रभाव पाया गया।
- **NCERT (2019)** की रिपोर्ट के अनुसार, उच्च आय वर्ग और निम्न आय वर्ग के छात्रों में सीखने के परिणाम और उपलब्धि-प्रेरणा में उल्लेखनीय अंतर है।

समीक्षा का सारांश

उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि छात्रों की उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा उनके परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, माता-पिता की शिक्षा और व्यवसाय, विद्यालय के प्रकार और वातावरण, लिंग एवं ग्रामीण-शहरी पृष्ठभूमि से गहराई से प्रभावित होती है। उच्च SES वाले छात्र अधिक अवसरों और संसाधनों के कारण उच्च उपलब्धि प्रेरणा रखते हैं, जबकि निम्न SES वाले छात्रों को प्रेरणा की कमी, संसाधनों की कमी और असफलता के भय जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

शोध के उद्देश्य

1. छात्रों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और उपलब्धि-प्रेरणा के बीच संबंध का अध्ययन करना।
2. उच्च और निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों के छात्रों की उपलब्धि-प्रेरणा में अंतर का विश्लेषण करना।
3. ग्रामीण और शहरी छात्रों की उपलब्धि-प्रेरणा पर सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रभाव ज्ञात करना।
4. विद्यालय के प्रकार (सरकारी/निजी) के आधार पर उपलब्धि-प्रेरणा की स्थिति का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति

- **शोध का प्रकार** – यह अध्ययन *वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक* प्रकृति का है।
- **नमूना (Sample)** – 200 छात्र-छात्राओं (100 ग्रामीण व 100 शहरी) को यादृच्छिक चयन पद्धति से चुना गया।
- **उपकरण (Tool)** – *Achievement Motivation Scale* (V.P. Bhargava द्वारा निर्मित) का प्रयोग किया गया।
- **सामाजिक-आर्थिक स्थिति मापन** – *SES Scale* (Kuppuswamy, संशोधित संस्करण) द्वारा किया गया।
- **सांख्यिकीय तकनीक** – औसत (Mean), मानक विचलन (SD), t-परीक्षण एवं सहसंबंध (Correlation) का प्रयोग।

डेटा विश्लेषण

1. वर्णनात्मक आँकड़े (Descriptive Statistics)

समूह	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)
उच्च SES छात्र	100	72.40	8.50
निम्न SES छात्र	100	61.20	9.10
ग्रामीण छात्र	100	63.10	8.90
शहरी छात्र	100	71.30	8.20

तालिका से स्पष्ट है कि उच्च SES और शहरी पृष्ठभूमि वाले छात्रों का उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा का औसत अंक अधिक है।

2. t-परीक्षण (t-test) – SES के आधार पर तुलना

- **परिकल्पना:** उच्च SES और निम्न SES छात्रों की उपलब्धि-प्रेरणा में अंतर होगा।
- **प्राप्त परिणाम:**
  - $t = 6.75$ ($df = 198$, $p < 0.01$)

उच्च और निम्न SES समूहों के बीच उपलब्धि-प्रेरणा में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया।

3. t-परीक्षण – ग्रामीण और शहरी छात्रों की तुलना

- **परिकल्पना:** ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की उपलब्धि-प्रेरणा में अंतर होगा।
- **प्राप्त परिणाम:**
  - $t = 5.10$ ($df = 198$, $p < 0.01$)

शहरी छात्रों की उपलब्धि-प्रेरणा ग्रामीण छात्रों से अधिक पाई गई।

4. सहसंबंध विश्लेषण (Correlation Analysis)

- माता-पिता की शिक्षा और उपलब्धि-प्रेरणा के बीच सहसंबंध: **$r = 0.42$ ($p < 0.01$)**
- पारिवारिक आय और उपलब्धि-प्रेरणा के बीच सहसंबंध: **$r = 0.38$ ($p < 0.01$)**

माता-पिता की शिक्षा एवं पारिवारिक आय दोनों का उपलब्धि-प्रेरणा के साथ सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

चर्चा

इस अध्ययन में प्राप्त परिणामों से स्पष्ट हुआ कि छात्रों की उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा पर उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का गहरा प्रभाव पड़ता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले छात्रों में उपलब्धि-प्रेरणा का स्तर निम्न SES छात्रों की तुलना में अधिक पाया गया। इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि उच्च SES परिवार अपने बच्चों को बेहतर शैक्षिक सुविधाएँ, संसाधन, समुचित अध्ययन वातावरण तथा मानसिक सहयोग प्रदान करते हैं।

शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच भी उपलब्धि-प्रेरणा में अंतर पाया गया। शहरी छात्रों का औसत स्कोर ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक था। यह अंतर शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध संसाधनों, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण और उच्च शैक्षिक अवसरों के कारण हो सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी और सीमित अवसर उपलब्धि-प्रेरणा को प्रभावित करते हैं।

माता-पिता की शिक्षा एवं पारिवारिक आय का उपलब्धि-प्रेरणा के साथ सकारात्मक सहसंबंध होना इस तथ्य को पुष्ट करता है कि परिवार का शैक्षिक एवं आर्थिक स्तर बच्चों की आकांक्षाओं, आत्मविश्वास और लक्ष्य-प्राप्ति की भावना को बढ़ाता है। जिन परिवारों में माता-पिता शिक्षित होते हैं, वहाँ बच्चों को न केवल प्रेरणा मिलती है, बल्कि सफलता के लिए सही मार्गदर्शन भी प्राप्त होता है।

ये निष्कर्ष पूर्ववर्ती शोधों के अनुरूप हैं। जैसे कि सिरिन (2005) और व्हाइट (1982) ने भी पाया कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति शैक्षिक उपलब्धि और प्रेरणा का एक महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता (predictor) है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में त्रिपाठी (2011) और वर्मा (2015) ने भी बताया कि माता-पिता की शिक्षा और पारिवारिक स्थिति का छात्रों की उपलब्धि-प्रेरणा पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इस अध्ययन से यह भी संकेत मिलता है कि केवल व्यक्तिगत प्रयास ही पर्याप्त नहीं हैं; बल्कि पारिवारिक पृष्ठभूमि और सामाजिक वातावरण भी छात्रों की सफलता में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। अतः यदि नीति-निर्माताओं और शिक्षाविदों को उपलब्धि-प्रेरणा को बढ़ाना है, तो उन्हें विशेष रूप से निम्न SES और ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्रों को शैक्षिक अवसर, मार्गदर्शन और संसाधन उपलब्ध कराने होंगे।

निष्कर्ष

इस शोध के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. **सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रभाव** – उच्च SES (सामाजिक-आर्थिक स्थिति) वाले छात्रों की उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा निम्न SES छात्रों की तुलना में उल्लेखनीय रूप से अधिक पाई गई।
2. **ग्रामीण बनाम शहरी अंतर** – शहरी छात्रों की उपलब्धि-प्रेरणा ग्रामीण छात्रों से अधिक रही। इसका कारण शहरी क्षेत्रों में बेहतर शैक्षिक अवसर, संसाधन और प्रतिस्पर्धी वातावरण हो सकते हैं।
3. **माता-पिता की शिक्षा का योगदान** – माता-पिता की शिक्षा का छात्रों की उपलब्धि-प्रेरणा पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया।
4. **पारिवारिक आय का महत्व** – पारिवारिक आय और उपलब्धि-प्रेरणा के बीच सार्थक सहसंबंध पाया गया। आर्थिक रूप से संपन्न परिवार अपने बच्चों को अधिक संसाधन और प्रेरक वातावरण प्रदान कर पाते हैं।
5. यह स्पष्ट है कि **छात्रों की उपलब्धि-उन्मुखी प्रेरणा केवल व्यक्तिगत प्रयासों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों से गहराई से प्रभावित होती है।**

सुझाव

1. **निम्न SES पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए विशेष योजनाएँ** – सरकार एवं विद्यालयों को ऐसी योजनाएँ बनानी चाहिए जो आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को अतिरिक्त शैक्षिक सहायता, छात्रवृत्ति एवं संसाधन उपलब्ध कराएँ।
2. **ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधन वृद्धि** – ग्रामीण विद्यालयों में पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, डिजिटल लर्निंग संसाधन तथा मार्गदर्शन सेवाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
3. **माता-पिता की भूमिका** – माता-पिता को शिक्षा के महत्व और बच्चों को प्रेरित करने की तकनीकों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए।
4. **प्रेरणा उन्मुखी कार्यक्रम** – विद्यालयों में उपलब्धि-प्रेरणा बढ़ाने हेतु कार्यशालाएँ, कैरियर काउंसलिंग एवं प्रतिस्पर्धात्मक गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए।
5. **शिक्षक प्रशिक्षण** – शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाए ताकि वे छात्रों की पारिवारिक व सामाजिक पृष्ठभूमि को समझते हुए उपयुक्त मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान कर सकें।
6. **नीति-निर्माण स्तर पर पहल** – शैक्षिक नीतियों में सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करने और समतामूलक अवसर उपलब्ध कराने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कोलमैन, जे. एस. (1966). *इक्वालिटी ऑफ एजुकेशनल अपॉर्चुनिटी.* वाशिंगटन डी.सी.: यू.एस. गवर्नमेंट प्रिंटिंग ऑफिस।
2. मैक्लीलैंड, डी. सी. (1961). *दि अचीविंग सोसाइटी.* प्रिंसटन, एन.जे.: वैन नोस्ट्रैंड।
3. एटकिंसन, जे. डब्ल्यू. (1964). *एन इंट्रोडक्शन टू मोटिवेशन.* प्रिंसटन, एन.जे.: वैन नोस्ट्रैंड।
4. व्हाइट, के. आर. (1982). "सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध"। *साइकोलॉजिकल बुलेटिन, 91*(3), 461–481।
5. सिरिन, एस. आर. (2005). "सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि: एक मेटा-विश्लेषण"। *रिव्यू ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 75*(3), 417–453।
6. सिवेल, डब्ल्यू. एच., एवं हॉउज़र, आर. एम. (1980). "शैक्षिक आकांक्षाओं और उपलब्धियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक"। *रिसर्च इन सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन एंड सोशलाइजेशन, 1*, 59–99।
7. मिश्र, आर. (2010). "किशोरों की उपलब्धि-प्रेरणा पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव"। *इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एंड एजुकेशन, 1*(2), 45–52।
8. त्रिपाठी, एस. (2011). "ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की उपलब्धि-प्रेरणा पर सामाजिक-आर्थिक कारकों का प्रभाव"। *जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 29*(1), 15–26।
9. अग्रवाल, आर. (2012). "विद्यालय प्रकार, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और किशोरों की उपलब्धि-प्रेरणा"। *जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड डेवलपमेंट, 2*(1), 33–40।
10. चौधरी, ए. (2013). "विद्यालय प्रकार और उपलब्धि-प्रेरणा: एक सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण"। *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, 51*(1), 88–102।
11. सिंह, ए. (2014). "लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उपलब्धि-प्रेरणा"। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च, 3*(2), 77–82।
12. वर्मा, पी. (2015). "माता-पिता की शिक्षा और पारिवारिक पृष्ठभूमि का छात्रों की उपलब्धि-प्रेरणा पर प्रभाव"। *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, 53*(2), 65–79।
13. शर्मा, पी. (2016). "माध्यमिक स्तर के छात्रों की उपलब्धि-प्रेरणा और पारिवारिक पृष्ठभूमि"। *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, 54*(2), 89–101।
14. कौर, जे. (2017). "किशोरियों की उपलब्धि-प्रेरणा पर सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रभाव"। *भारतीय शिक्षा पत्रिका, 42*(3), 56–63।
15. रानी, एस. (2018). "सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का किशोरियों की उपलब्धि-प्रेरणा पर प्रभाव"। *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 44*(3), 12–21।
16. एनसीईआरटी. (2019). *लर्निंग आउटकम्स एंड एजुकेशनल इनइक्वालिटीज इन इंडिया.* नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
17. यादव, एम. (2020). "ग्रामीण और शहरी छात्रों की उपलब्धि-प्रेरणा: सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य"। *एजुकेशनल क्वेस्ट, 11*(2), 101–110।